समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

अहमदाबाद एयर इंडिया हादसे की जांच मे देरी : केंद्रं का स्पष्टीकरण, जल्दबाजी मे नंहीं होगा दबाव

Publisher

Published on 07 Oct 2025

अहमदाबाद एयर इंडिया विमान हादसे की जांच में देरी को लेकर केंद्र सरकार ने सार्वजनिक रूप से स्थिति स्पष्ट की है। केंद्रीय नागर विमानन मंत्री राममोहन नायडू ने हाल ही में बताया कि विमान हादसे की जांच में किसी भी तरह की गड़बड़ी या लापरवाही नहीं हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इंवेस्टिगेशन ब्यूरो (AAIB) पर जल्दबाजी करने का कोई दबाव नहीं डाल रही है, ताकि जांच पूरी तरह से निष्पक्ष और विस्तार से की जा सके।

अहमदाबाद एयर इंडिया हादसा पूरे देश में सुर्खियों में रहा। इस हादसे में विमान दुर्घटना के कारण कई सवाल उठे और यात्री सुरक्षा को लेकर चिंताएं भी बढ़ीं। हादसे के तुरंत बाद से ही विभिन्न हितधारक, यात्री संघ और मीडिया लगातार जांच की प्रगति के बारे में जानकारी मांगते रहे।

केंद्रीय मंत्री राममोहन नायडू ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि “हमारा प्राथमिक लक्ष्य जांच को पूरी तरह से निष्पक्ष और वैज्ञानिक तरीके से पूरा करना है। जल्दबाजी में की गई जांच से किसी भी निष्कर्ष की विश्वसनीयता पर सवाल उठ सकता है। इसलिए AAIB को आवश्यक समय दिया जा रहा है।”

उन्होंने यह भी बताया कि AAIB की टीम विशेषज्ञों से भरी हुई है और जांच प्रक्रिया में सभी तकनीकी पहलुओं को ध्यान में रखा जा रहा है। इसमें विमान के ब्लैक बॉक्स, फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर, और क्रू के बयान के अलावा मौसम की स्थिति और एयर ट्रैफिक नियंत्रण के रिकॉर्ड की भी समीक्षा की जा रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार, विमान हादसों की जांच में देरी आम बात है क्योंकि जांच में हर पहलू की गहन पड़ताल की जाती है। विमान की संरचना, तकनीकी विफलताएं, एयरलाइन की प्रक्रियाओं, और एयर ट्रैफिक नियंत्रण से जुड़े सभी डेटा को परखा जाता है। इसके अलावा, सभी संभावित कारणों की पुष्टि के लिए कई प्रयोगशालाओं और तकनीकी विशेषज्ञों की मदद ली जाती है।

केंद्रीय मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि AAIB की निष्पक्षता पर किसी प्रकार का दबाव नहीं है। उन्होंने कहा कि “हम चाहते हैं कि जांच पूरी तरह से पारदर्शी हो और सभी संभावित कारण सामने आएं। इसमें जल्दबाजी करना सुरक्षा और निष्पक्षता दोनों के लिए हानिकारक हो सकता है।”

हालांकि, यात्रियों और आम जनता में अभी भी यह सवाल उठता है कि जांच में देरी क्यों हो रही है। विमान दुर्घटनाओं के विशेषज्ञों का मानना है कि देरी का मुख्य कारण तकनीकी जाँच और डेटा एनालिसिस में समय लगना है। ब्लैक बॉक्स से मिले रिकॉर्ड का विश्लेषण, विमान के इंजनों और अन्य उपकरणों की जांच, और क्रू के प्रशिक्षण रिकॉर्ड की समीक्षा कई हफ्तों तक चल सकती है।

विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, AAIB की टीम पहले ही विमान दुर्घटना स्थल का दौरा कर चुकी है और प्रारंभिक डेटा संग्रहण पूरा कर लिया है। अब मुख्य चुनौती है सभी डेटा का विस्तृत विश्लेषण करना और संभावित कारणों को सुनिश्चित करना।

मंत्री राममोहन नायडू ने यह भी कहा कि “हमारी सरकार का मानना है कि जांच में समय लगना बेहतर है, बजाय किसी अधूरी या जल्दबाजी में तैयार रिपोर्ट के। इससे भविष्य में ऐसे हादसों को रोकने के लिए ठोस नीतियां बनाई जा सकती हैं।”

सुरक्षा विशेषज्ञों ने भी इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है। उनका कहना है कि विमान हादसों की जांच में जल्दबाजी से भविष्य में सुरक्षा नीतियों और तकनीकी सुधारों पर असर पड़ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि AAIB जैसी संस्थाओं को पर्याप्त स्वतंत्रता और समय देना बेहद जरूरी है ताकि सभी तथ्यों की सही पहचान की जा सके।

इस बीच, केंद्र सरकार ने यात्रियों और उनके परिवारों के लिए पूरी जानकारी साझा करने की प्रतिबद्धता जताई है। मंत्री ने आश्वासन दिया कि जब भी जांच का कोई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आएगा, उसे सार्वजनिक किया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस विमान हादसे की जांच न केवल एयर इंडिया के लिए बल्कि पूरे भारतीय विमानन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है। इससे आने वाले समय में सुरक्षा मानकों में सुधार करने और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

केंद्रीय मंत्री राममोहन नायडू के बयान से यह भी साफ हुआ कि सरकार की प्राथमिकता केवल निष्पक्ष और तकनीकी दृष्टि से सही जांच करना है, न कि जल्दबाजी में किसी प्रकार का दबाव डालना। AAIB इस मामले में पूरी स्वतंत्रता के साथ काम कर रही है और उनकी रिपोर्ट आने वाले हफ्तों में महत्वपूर्ण सुराग दे सकती है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.